अध्याय : 1

'अज्ञेय का व्यक्तित्व तथा कृतित्व'

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अध्याय : 1

'अज्ञेय का व्यक्तित्व तथा कृतित्व'

प्रस्तावना :

'अज्ञेय' के उपन्यासों में चित्रित मानव जीवन के तत्वज्ञान का अध्ययन ही उनका प्रमुख विषय रहा है। 'अज्ञेय' हिंदी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध, संपादन कार्य में उनका समान अधिकार रहा है। इसिलिए साहित्यकार की कृति का मूल्यांकन करने के लिए उसके जीवन की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। प्राप्त सामग्री के आधारपर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की तह तक पहुँचना ही प्रस्तुत अध्याय का मुख्य उद्देश्य है।

1.1 अज्ञेय का जीवनवृत्त

'अज्ञेय' विविधमुखी प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार है और गद्य एवं पद्य दोनों में समान रूप से उनकी गति रही है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध एवं यात्रा वर्णन आदि विविध साहित्य विधाओं को सफलतापूर्वक अपनाया है तथा सभी में उन्हें ख्याति भी प्राप्त हुई है। हिंदी साहित्य में अज्ञेय का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है।

जन्म तथा बचपन :

अज्ञेय जी का जन्म सात मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के कसिया पुरातत्व शिबिर में हुआ था। उनका वास्तविक नाम सच्चिदानन्द वात्स्यायन और उनके पिताजी का नाम हीरानन्द वात्स्यायन था। 'अज्ञेय' इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते हैं। अपने उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी भाग - 1' की भूमिका में अज्ञेय ने स्वयं में और शेखर में अंतर किया हैं तथापि बाल्यकालीन अंश के विषय में उनका कथन है कि - "शिशु मानस के चित्रण की सच्चाई के लिए मैंने 'शेखर' के आरंभ के खंड़ों में घटनास्थल अपने ही जीवन से चुने है।"[1] पिताजी की नौकरी के

कारणवश अज्ञेय को बचपन से ही श्रीनगर, नालन्दा, पटना, लाहौर, लखनऊ, बडौदा, ऊटकमंड और मद्रास आदि स्थानों पर घूमने का अवसर मिला।

माता-पिता :

'अज्ञेय' का परिवार मूलत: करतापूर निवासी सारस्वत ब्राह्मण परिवार से संबंधित है। इनके पिता हीरानन्द वात्स्यायन संस्कृत के विद्वान थे। धार्मिक ग्रंथों में उनकी अभिरुचि कुछ अधिक ही थी, घर पर एक घरेलू पुस्तकालय भी विकसित कर रखा था। ब्राह्मण परिवार का होने के नाते अज्ञेय जी का यज्ञोपवीत संस्कार (जनेऊ संस्कार) सन 1921 में लगभग दस वर्ष की आयु में उडपी के पंडित श्री. मध्वाचार्य द्वारा संपन्न हुआ था। अज्ञेय जी के पिताजी डॉ. हीरानंद वात्स्यायन पुरातत्व विभाग में एक उच्च अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। अज्ञेय के पिता का नाम तो पुस्तकों में मिल भी जाता है, लेकिन उनकी माता का नाम कहीं दिखाई नहीं देता। एक बात की ओर ध्यान अवश्य जाता है कि उनकी माँ का नियंत्रण पिता की अपेक्षा उन पर कुछ अधिक ही रहा, जबकि बालक सच्चिदानंद के मन में माँ की अपेक्षा पिता के प्रति आकर्षण अधिक दिखाई देता है। अज्ञेय जी के परिवार में उनके भाई और बहनें भी थीं। भाई और माँ के आकस्मिक निधन से उनको गहरी ठेस पहुँची थी। माँ के देहावसान के समय अज्ञेय जी नजरबंद थे।

शिक्षा :

अज्ञेय जी की आरंभिक शिक्षा संस्कृत में घर पर हुई और संस्कृत के अलावा उन्हें फारसी और अँग्रेजी का ज्ञान घर पर ही कराया गया। 'शेखर : एक जीवन' में अज्ञेय ने स्कूली शिक्षा संबंधी अपने विचार प्रकट किए हैं... ''शिक्षा देना संसार अपना सबसे बड़ा कर्तव्य समझता है, किंतु शिक्षा अपने मन की, शिष्य के मन की नहीं।''[2] जब वे आठ वर्ष के हुए, तब उन्हें अपने पिता जी के साथ नालन्दा और पटना जाने का सुअवसर मिला। यहीं पर वे स्व. श्री. काशी प्रसाद जायसवाल और स्व. श्री. राखालदास वन्धोपाध्याय के संपर्क में आए। इन्हीं दोनों विद्वानों की महती कृपा से अज्ञेय जी ने बंगला भाषा सीखी। सन् 1925 में पंजाब से प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित हुए और

परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। सन् 1920 में बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एम.ए. की पढ़ाई के लिए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, लेकिन स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लेने के कारण उनकी एम.ए. की पढ़ाई अधूरी रह गई। अज्ञेय जी प्रोफेसर हेण्डरसन की प्रेरणा से साहित्य के अध्ययन की ओर आकर्षित हुए और साहित्य के प्रति निष्ठा, लगन और समर्पण की वजह से वे हिंदी साहित्य के एक अमूल्य निधि हो गए। उनका अधिकांश समय अध्ययन में व्यतीत होता था। धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ उन्होंने अँग्रेजी साहित्य का भी खूब अध्ययन किया। यही कारण है कि अज्ञेय जी के साहित्य में टेनिसन की स्पष्ट छाप ढलकती है।उनके उपन्यास : 'शेखर : एक जीवनी' में तो अँग्रेजी शब्दों की भरमार है। उन्होंने हिंदी के महान कवियों मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, निराला, जय शंकर प्रसाद आदि की कृतियों का भी अध्ययन किया।

नौकरी :

सन 1936 में अज्ञेय कार्य क्षेत्र में उतरे और कुछ समय तक आगरा से 'सैनिक' का संपादन किया परंतु कुछ ही दिनों में संपादन कार्य छोड़कर मेरठ में किसान आंदोलन में काम किया। सन् 1937 में विशाल भारत (कलकत्ता) के संपादकीय विभाग में रहे लेकिन वहाँ भी लगभग डेढ़ वर्ष ही रह सके। कुछ समय तक वे पिता के पास बडौदा रहे और उनकी इच्छानुसार विदेश जाकर अध्ययन पूरा करने का कार्यक्रम बनाने लगे, पर युद्ध छिड़ जाने से उनकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी। अत: रेड़िओ में कुछ समय तक नौकरी करने लगे। अज्ञेय जी ने सन् 1961 के सितंबर में अमरिका के कॅलिफोर्निया में 'भारतीय संस्कृति और साहित्य' के अध्यापक की नौकरी की। इसके साथ-साथ वे अविरत साहित्य सृजन करते रहे। साथ ही सन् 1942 में अज्ञेय जी ने दिल्ली में अखिल भारतीय फासिस्ट विरोधी संमेलन का आयोजन किया तथा सन् 1943 में वे सेना में दाखील हुए। वे कॅप्टन के रूप में आसाम - बर्मा फ्रंट पर नियुक्त हुए और सन 1946 में उन्हें सेना से सेवा मुक्ति मिली।

विवाह :

अज्ञेय जी का पहला विवाह सन् 1940 में संतोष मल्लिक से हुआ। दुर्भाग्यवश यह विवाह सफल नहीं हुआ और विवाह के अल्प समय पश्चात् ही विवाह-विच्छेद की नौबत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

आ गई। यह वही वर्ष था, जब अज्ञेयजी का पहला उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' ने हिंदी उपन्यास जगत् में अपना नाम अंकित कराया। अज्ञेय जी ने दुबारा विवाह के लिए मन बनाया और जुलाई 1956 में कापिला मल्लिक के साथ अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे लिए। इस विवाह के बाद वे इलाहाबाद में आकर रहने लगे थे। डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं- ''जुलाई, 1964 में अज्ञेय स्वदेश लौटते ही अस्वस्थ हो गये तथा कई महिनों उन्हें अस्पताल में दुखद कष्ट झेलने पड़े लेकिन कपिला जी की सेवा और उनके अपने निजी विश्वास ने स्वास्थ्य लौटाया, पर सतर्कता की एक बंदिश बाँध दी''[3] कापिला के साथ का उनका वैवाहिक जीवन भी लम्बे समय तक नहीं चल पाया। सन् 1966 के बाद यह दाम्पत्य-जीवन भी टूट गया। इसके बाद इनके जीवन में इला डालमिया आ गई और संभवत: इन्होंने अंत तक अज्ञेय जी का साथ निभाया। इससे स्पष्ट होता है कि उनका वैवाहिक जीवन, सफल तो नहीं कहा जा सकता।

स्वभाव :

बचपन से ही अज्ञेय जी के मन में क्रांति एवं देश-प्रेम की भावना ने जन्म ले लिया था। उनके भीतर प्रकृति के प्रति अटूट प्रेम, यायावरी और एकांतप्रियता कूट-कूट कर भर उठी है। अज्ञेय जी स्पष्टवादी स्वभाव के थे। वह सच्ची बात किसी को भी कहने में नहीं चूकते थे। वे हँसी-मजाक भी करते थे।

मृत्यु :

मृत्यु तो आखिर मृत्यु ही है - जीवन का एक कटु सत्य, जीवन का एक अंतिम पड़ाव, जीवन की एक अंतिम यात्रा और दुनिया का सबसे बड़ा सच, जिसे चाहकर भी कोई नकार नहीं सकता। इसका आना तो निश्चित ही होता है और यह आती भी अवश्य है। अज्ञेय जी ने अपने जीवन में कड़ा संघर्ष किया है। वे अपनी अनुभूतियों की वजह से तपकर निखर गए थे। क्रांतिकारी जीवन में एक बार चंबा में रावी के पुल पर से छलांग लगाने से घुटने की टोपी उतर गयी, जिसका दर्द उन्हें जीवन के अंत तक सताता रहा। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार का देहांत 4 अप्रैल, 1987 ई. में हुआ।

1.2 व्यक्तित्व

'अज्ञेय' विविधमुखी प्रतिभा - संपन्न साहित्यकार थे। वे सशक्त क्रांतिकारी, धुमक्कड, संपादक थे। अनेकविध पहेलू अज्ञेय जी के व्यक्तित्व में परिलक्षित होते हैं।

क्रांतिकारी :

विद्यार्थी जीवन में अज्ञेय जी क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उनका क्रांतिकारी जीवन लाहौर से प्रारंभ हुआ। हिंदुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बनने पर आजाद, सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि से परिचय हुआ। लगभग पाँच वर्षों तक अज्ञेय ने क्रांतिकारक जीवन बिताया। क्रांतिकारक अज्ञेय के संदर्भ में श्री. श्रीनिवास मिश्र कहते हैं - "हिमालयन टॉयलेट्स फॅक्ट्री में वैज्ञानिक सलाहकार के पद पर रहते हुए उन्होंने छिपकर बम बनाना आरंभ किया। इसी कारण 15 नवंबर सन् 1930 को उन्हें मुहम्मद बख्श के रूप में बन्दी बना लिया गया और लगातार तीन वर्ष तक दिल्ली की काल-कोठरी में पड़े रहे। 1931 में दिल्ली में भी मुकदमा चला जो 1933 तक चला। 1934 में नजरबंदी कानून के अंतर्गत नजरबंद। नजरबंदी हटने तक इन्हें डलहौसी और लाहौर में ही रहना पड़ा।"[4] सात साल उन्हें इस तरह से क्रांतिकारक के रूप में काटना पड़ा। इस प्रकार अज्ञेय जी का क्रांतिकारी रूप हमारे सामने आता है।

यायावरी :

अज्ञेय जी ने अपने जीवनकाल में देश विदेश की अनेक यात्राएँ की। अप्रैल, 1955 में अज्ञेय पहली बार युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी युरोप की यात्रा पर गए और इस यात्रा ने उन्हें कई बार रचनाओं के सृजन की प्रेरणा दी। अगस्त, 1957 में वे जापान और फिलीपीन की यात्रा पर रवाना हुए तथा अप्रैल, 1957 में स्वदेश लौटने पर सन् 1960 तक दिल्ली में निवास करते रहे। अप्रैल, 1960 में वे दूसरी बार युरोप यात्रा पर निकले और 1961 सितंबर में अमरिका के कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य के अध्यापक होकर गए। सन् 1966 में वह रूमानिया, युगोस्लाविया, रूस तथा मंगोलिया की यात्रा पर गए। इसी वर्ष उन्होंने बीकानेर, अजमेर, शिमला, दिल्ली और एर्नाकुलम के

आयोजनों में भाग लिया। जनवरी, 1967 में ऑस्ट्रेलिया में जो एशियाई देशों में साहित्य विनिमय विषय के लिए एक सेमिनार आयोजित किया गया उसमें भारत से अज्ञेय ही सम्मिलित हुए।

संपादकीय- व्यक्तित्व

सन् 1943 के आस-पास ही अज्ञेय जी ने हिंदी साहित्य-परिवाद की स्थापना की। 'प्रतिक' प्रत्रिका का प्रकाशन किया। ऑल इंड़िया रेड़िओ में नौकरी की। सन् 1965 में 'दिनमान' पत्रिका के संपादन की जिम्मेदारी उठाई सन् 1977 में दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के भी वे संपादक बने। सन् 1978 तक 'नया प्रतिक' का भी संपादन किया। इस प्रकार अज्ञेय विविध रूपों के साथ-साथ संपादक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं।

1.3 **कृतित्व**

'अज्ञेय' ने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, निबंध, एवं यात्रा वर्णन आदि विविध साहित्य विधाओं को सफलतापूर्वक अपनाया है तथा सभी में उन्हें ख्याति भी प्राप्त हुई है। आपकी प्रमुख रचना निम्नलिखित हैं -

काव्य संग्रह :

1) भग्नदूत (1933)
2) चिन्ता (1941)
3) इत्यलम् (1946)
4) हरी घास पर क्षण भर (1949)
5) बावरा अहेरी (1954)
6) इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे (1957)
7) अरी ओ करूणा प्रभामय (1959)
8) आँगन के पार द्वार (1961)
9) पूर्वा (1965)
10) सुनहले शैवाल (1966)

11) कितनी नावों में कितनी बार (1967)

12) क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970)

13) सागर मुद्रा (1970)

14) पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974)

15) महावृक्ष के नीचे (1977)

संपादित काव्य संकलन :

1) तारसप्तक (1943)

2) दूसरा सप्तक (1951)

3) पुष्करिणी (1959)

4) तीसरा सप्तक (1959)

5) रूपाम्बरा (1960)

6) चौथा सप्तक (1979)

उपन्यास :

1) शेखर : एक जीवनी भाग-1 (1941)

2) शेखर : एक जीवनी भाग-2 (1944)

3) नदी के द्वीप (1951)

4) अपने-अपने अजनबी (1961)

कथा संकलन :

1) विपथगा (1937)

2) परम्परा (1944)

3) कोठरी की बात (1945)

4) शरणार्थी (1947)

5) जयदोल (1951)

6) अमरवल्ली और अन्य कहानियाँ (1954)

7) कडियाँ और अन्य कहानियाँ (1957)

8) अज्ञेय की कहानियाँ भाग-3 (1961)

9) अज्ञेय की कहानियाँ भाग-4 (1961)

10) ये तेरे प्रतिरूप (1961)

11) लौटती पगडंडियाँ (1975)

12) छोड़ा हुआ रास्ता (1975)

नाटक :

1) नए एकांकी (सम्पादित, 1952)

2) उत्तर प्रियदर्शी (नाट्य् काव्य, 1967)

निबंध एवं विचारात्मक गद्य

1) त्रिशंकु (1945)

2) सबरंग (1956)

3) आत्मनेपद (1960)

4) आधुनिक हिंदी साहित्य (1965)

5) सबरंग और कुछ राग (1966)

6) हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य (1967)

7) आलवाल (1971)

8) लिखि कागद कोरे (1972)

9) भवन्ती (1972)

10) अन्तरा (1975)

11) जोगलिखी (1977)

12) अद्यतन (1977)

13) संवत्सर (1978)

14) स्त्रोत और सेतु (1978)

यात्रा संस्मरण

1) अरे यायावर रहेगा याद (1953)

2) एक बूँद सहसा उछली (1961)

पत्रकारिता

1. सैनिक (साप्ताहिक, 1936-37)
2. विशाल भारत (मासिक, 1937-39)
3. भारती (मासिक, 1941)
4. प्रतिक (मासिक, 1947-52)
5. वाक् (त्रैमासिक, 1950)
6. दिनमान (साप्ताहिक, 1965)
7. नया प्रतिक (मासिक, 1974)
8. नवभारत टाइम्स (दैनिक, 1977)

अंग्रेजी में लेखन

1. श्रीकांत (शरतचंद्र के मूल बंगला उपन्यास का अनुवाद, 1944)
2. द रेजिग्नेशन (जैनेन्द्रकुमार के उपन्यास 'त्यागपत्र' का अनुवाद, 1946)
3. प्रिजन डेज एण्ड पोयम्स (काव्य संकलन, 1946)

विशिष्ट पुरस्कार

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार :- 'आँगन के पार द्वार' (कविता संकलन, 1964)
2. ज्ञानपीठ पुरस्कार :- 'कितनी नावों में कितनी बार' (कविता संकलन, 1978)
3. सन् 1983 में युगोस्लाविया का अंतराष्ट्रीय काव्य पुरस्कार - 'स्वर्णमान' भी अज्ञेय जी को दिया गया।

1.4 साहित्यिक व्यक्तित्व

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन का उपनाम 'अज्ञेय' था। वे कवि, लेखक, पत्रकार और क्रांतिकारी विचारक थे। अज्ञेय जब दिल्ली जेल में थे तब उनकी दो कहानियों को

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

जैनेंद्रकुमारजी के हाथों प्रेमचंदजी के 'जागरण' मासिक के लिए भेजा गया। प्रेमचंदजी ने लेखक का नाम जब पूछा तब जैनेन्द्रजी ने 'अज्ञेय' बताया, तब से यही नाम उन्हें प्राप्त हुआ। 'अज्ञेय' का अर्थ होता है जिसे जाना नहीं जा सकता। कविता, कहानी, उपन्यास आदि के लेखन के लिए 'अज्ञेय' नाम लिखा जाता था। व्यावहारिक वात्स्यायन और रहस्य ओढ़े हुए 'अज्ञेय' यह उनके व्यक्तित्व के दो हिस्से थे।

वे बहुज्ञ थे, कई भाषाओं को वे जानते थे - पंजाबी उनकी मातृभाषा थी। आर्य समाजी प्रभाव के कारण घर पर संस्कृत और शुद्ध हिंदी में बोलते थे। उन्होंने फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी का साहित्य भी पढ़ा था। उर्दू, बंगाली, गुजराती, तामिल भाषा भी बोलते थे। उनका नदी, पर्वत, जंगल, समुद्र का ज्ञान बहुत बडा था।

शिल्पकला, स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य तथा नाट्यकला में उनकी गहरी रुचि थी। फोटोग्राफी भी वे अच्छी तरह से जानते थे। ज्ञान विज्ञान के हर विषय में वे रूचि लेते थे। 'अज्ञेय' बहुत श्रमशील लेखक थे। साहित्यिक विवादों में वे कभी नहीं पड़ते थे। उनके व्यक्तित्व में गरिमा और भव्यता थी। उनकी रचनाओं को देखने के बाद उनके गहन, विशाल अध्ययन और चिंतन का परिचय मिलता है। पाश्चात्य साहित्य के साथ-साथ उन्होंने यहाँ के धर्म, संस्कृति, दर्शन और साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। उनकी प्रतिभा का एक विशेष रूझान था। अपनी आत्मानुभूति के आधारपर ही वे रचनाओं का निर्माण करते थे।

1.5 **प्रेरणा एवं प्रभाव**

लेखक की साहित्य वस्तु की प्रेरणा का स्त्रोत समाज का जो वर्ग बनता है, उसी वर्ग के जीवन, नियम, आचरण, रीतियाँ, समस्याएँ और धारणाएँ आदि का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है। 'अज्ञेय' के उपन्यास पढ़ते समय समाज के एक विशिष्ट प्रकार के वर्ग का ज्ञान होता है। यह वर्ग शिक्षित लोगों का है। जिनका रूप बहुत पुराना नहीं है। 'अज्ञेय' के उपन्यासों में भारतीय जनता और इस अभिजात वर्ग का अलगाव बड़ी तीव्रता से दिखाई देता है। उनकी साहित्य वस्तु के प्रेरणास्त्रोत इस अभिजात वर्ग में ही मिलते हैं।

'शेखर : एक जीवनी' का शेखर जिन लोगों से घिरा है, वे सभी समाज में समृद्ध है तब से आए है। यह परिश्रम करनेवाला वर्ग नहीं है। ये सभी पात्र प्रबुद्ध अभिजात वर्ग के है और परिणामी हैं। शेखर भी इसी वर्ग का पात्र है - परिणामी है। इन पात्रों के सामान्य जनता से भिन्न अपने तौर-तरीके और आचरण रीतियाँ हैं।

भारतीय समाज को जब अज्ञेय ने गहराई से देखा तो उन्हें भारतीय समाज ज्ञान के बारे में पिछडा हुआ दिखाई दिया। 'अज्ञेय' ने अपने साहित्यनिर्मिती में भारतीय समाज की ओर संकेत किया है। भारतीय समाज ज्ञान और लोगों के पिछड़ेपन को लेकर 'अज्ञेय' के साहित्य नें एक विशेष प्रकार की उदासीनता दिखाई देती है। 'अज्ञेय' ने मौका मिलते ही पिछड़े हुए भारतीय समाज में उन्हें न समझनवाले लोगों पर प्रहार किये हैं।

'अज्ञेय' की प्रारंभिक रचनाओं पर अंग्रेजी कवि टेनिसन, ब्राऊनिंग, लॉरेन्स, इलियट आदि कवियों की कविता का प्रभाव पड़ा है। अज्ञेय ने 'आत्मनेपद' में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है - ''मेरी कविता हिंदी में लिखी गई अंग्रेजी कविता है, ऐसा कहकर कुछ लोग समझते हैं कि उन्होंने प्रशंसा की हैं, कुछ समझते हैं कि महानिंदा है। मैं तो नहीं समझता कि मेरी कविता में ऐसा कुछ हैं जो भारत की ही काव्य परंपरा द्वारा अनुमोदित न हो सकता है।''[5] 'अज्ञेय' पर फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक दर्शन का प्रभाव पड़ा है। यही प्रभाव उनके कथा साहित्य में भी दिखाई देता है। 'अज्ञेय' के कथासाहित्य के साथ 'मनोवैज्ञानिक' लेबल चिपक गया है। 'अज्ञेय' साहित्य में मनोविज्ञान के प्रभाव का जहाँ तक प्रश्न है वहाँ कविता से अधिक कथा साहित्य में अनेक ढंग से व्याप्त दिखाई देता है।

'अज्ञेय' के कथासाहित्य में दिखाई देनेवाला मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण फ्रायड से प्रभावित है। 'अज्ञेय' के प्रथम उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' में विशुद्ध मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिशु मानस का सफल निरूपण हुआ है। 'अज्ञेय' के सभी पात्र अहं भाव से प्रभावित होने के कारण व्यष्टिवादी है। 'अज्ञेय' ने आधुनिकता को अधिक गहरे रूप में स्वीकारा है। मनोविश्लेषणात्मक पद्धति के निर्वाह स्वरूप अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में बौद्धिकता को सर्वोपरि स्थान दिया है। भावुकता को कम महत्त्व दिया है। 'शेखर' के बचपन का उस पर पडनेवाली छापों का लेखक ने विदग्ध चित्रण किया है। और ऐसे जीवन-

चित्र को लेकर लिखा गया यह पहला हिंदी उपन्यास है। माँ के प्रति शेखर की घृणा की 'इडिपस कॉम्प्लेक्स' के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत से व्याख्या की जा सकती है। फ्रायड के 'अहंभाव' और 'यौन भावना' का भी प्रभाव 'अज्ञेय' के उपन्यासों में पूर्ण रूप से प्रवाहित होता हुआ दिखाई पड़ता है। लेकिन मानवीय संवेदनाओं का प्रभाव भी उनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है।

जैनेन्द्र और इलाचंद्र जोशी ये उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर चले हैं उसी समय 'अज्ञेय' का हिंदी उपन्यास क्षेत्र में पदार्पण होता है। आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान के प्रयोग से उसके कलेवर में पर्याप्त अंतर आया। 'अज्ञेय' ने जैनेन्द्र और इलाचन्द्र जोशी दोनों की कला को एक समन्वित एवं श्रेष्ठ रूप में परिलाक्षित किया है। 'अज्ञेय' का मनोविश्लेषण सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से सर्वथा श्रेष्ठ, परिनिष्ठत, कलात्मक तथा प्रभावोत्पादक है।

निष्कर्ष :

अज्ञेयजी का बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व बड़ा ही लुभावनेवाला था। उनका व्यक्तित्व उनके जीवन में जो उतार-चढ़ाव आए उनके अनुरूप ही, अंत तक रहा। 'अज्ञेय' के 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', तथा 'अपने-अपने अजनबी' इन तीनों उपन्यासों में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन दिखाई देता है। व्यक्ति विकास के जीवन मूल्यों में आस्था रखनेवाले तथा सोद्देश्य साहित्य रचना करनेवाले उपन्यासकारों में से 'अज्ञेय' एक है। इस कारण व्यक्ति विकास की विशिष्ट जीवन-दृष्टि का समावेश उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। उनके उपन्यासों में प्रेम की नवीन नैतिक तथा आत्मपीड़ा का चित्रण, विद्रोह की भावना का प्राबल्य, फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव आदि विषयों का चित्रण हुआ है। वास्तव में रचनाकार अपनी रचना से कितना तटस्थ रहता है इस पर उसका मूल्यांकन निर्भर रहता है। लेकिन अपनी कृति से तटस्थ रहने में 'अज्ञेय' पूरी तरह से सफल नहीं हुए हैं, ऐसा हम मानते हैं।

संदर्भ :

1. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 1
2. अज्ञेय- शेखर: एक जीवनी, भाग 1, पृष्ठ 53
3. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का काव्य : एक विश्लेषण, पृष्ठ 7, 8
4. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का काव्य : एक विश्लेषण, पृष्ठ 6
5. अज्ञेय - आत्मनेपद, पृष्ठ 29

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.